International Journal of Applied Research 2017; 3(2): 248-250

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(2): 248-250
www.allresearchjournal.com
Received: 09-01-2017
Accepted: 10-02-2017

सुनीता देवी
षक्ति नगर गली न0 1, बरनाला रोड़ सिरसा, भारत।

Correspondence
सुनीता देवी
षक्ति नगर गली न0 1, बरनाला रोड़ सिरसा, भारत।

रीतिकालीन सतसई काव्य में मानव मूल्य

सुनीता देवी

प्रस्तावना

रहीम के दाहे नीतिपरक तथा अनुभव के ताप में तपे है। कवि दयाराम के दोहे भी अनुभव की ऑच पर ही तपे हैं। इनमें यर्थाथ का स्पष्ट है। इनमें पारम्परिकता होते हुए भी तत्कालीन जीवन की अनेकानेक सच्चाईयों को निस्वार्थ, बिना लाग लपेट के कहने का प्रयास किया गया है। इनमें ना तो आडम्बर का आच्छादन ही है और न ही आग्रह की भूमिका ही है। जो जैसा है उसको वैसा ही प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

दयाराम जी की मान्यता है कि शास्त्रानुसार और परम्परानुसार '' जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा ''विधि का विधान असत्य है क्योंकि दुष्टजन फलते–फुलते रहते हैं और साधुगण उजड़ते रहते है। बकासुर सुगति को प्राप्त हुआ जबकि उसने श्रीकृष्ण को जहर दिया था।

देसो पावे बदे बच, पे क्यों कहिये सत्य।
बकि भूधो माहुर दयो, कस पाई सुभ गत्य।। [1]

बड़े आदमी उपदेश देते हैं। उनकी कथनी का विश्वास करो और उनकी करनी का अनुसरण करो–

'करवि खरी बड़वै खरी, करनी करति न संत।
रषम बाति भाति श्रे लो , अशिव कति अरिहंत।। [2]

भगवान ऋषभ की वाणी का जिन्होंने अनुकरण किया है। उनको श्रेय की प्राप्ति हुई, किन्तु अरिहंत ने उनकी कथनी का त्यागकर ''करनी'' का अनुसरण किया तो उसको अभंगण का शिकार होना पड़ा।

कार्य कारण का नियम अटूट माना गया है किन्तु यह भी सत्य नहीं हैं। दयाराम कहते हैं– पिता कारण है, पुत्र कार्य, लेकिन पिता के समान पुत्र नहीं होता। उग्रसेन की प्रवृति नम्र थी और उसका पुत्र कंस क्रूर हुआ। जहरीले सर्प में ज्योतिपुंज भणि का वास होता है और प्रकाशधर्मा दीपक से काजल पैदा होता है।

'कारन से कारज न किल पुत्र हूं सब पितुसेन।
मनि अहिं सों कित दीप मिस उग्र कसं प्रधुबेन।। [3]

इसी प्रकार कवि वृन्द ने लिखा है कि–

'करै बुराइ सुख चहै, कैसे पावै कौइ।
रौपे बिरवा आक कौ, आम कहां ते हौइ।।' [4]

संसार में श्रम का महत्व अत्यधिक हैं। कार्यशीलता ही अक्षय पूंजी है। जिसको चलाने का ज्ञान है तलवार उसी की होती है, जो पालता है उसका धर्म होता है, जो पढ़ता है विद्या पर उसी का आधिपत्य होता है और जो साधना करता है, पूजा करता है, भगवान उसी साधक का होता है।

जिन भार्यो ताको असि, पायो ताको ध्रह्म।
ताकि विद्या जिन पढ़ी भजे वाहि के ब्रह्म।। [5]

ऋण या कर्ज समाज की विकट समस्या है, ऋण का घाव नासूर बनकर सड़ता हैं। दयाराम की मान्यता है कि ऋण का घाव तो शेर के पंजे के घाव से भी अधिक घातक होता है। शेर के द्वारा दिया गया घाव एक बार पीड़ा देकर ठीक हो जाता है, किन्तु कर्ज के वार का घाव तो रिसता ही रहता है।

बेसो करज निहारि दुख, जेसो करज नहार।
पे कछु भल वह रटत द्रुत, यह न हार विस्तार।। [6]

कहने का तात्पर्य यह है कि ऋण की मार अत्यधिक पैनी व घातक होती है और ऋण भी व्यक्ति श्रम के अभाव में ही लेने को बाध्य होता है। यदि श्रम न हो तो जीवन निरर्थक बन जाता है।

उत्तम, मध्यम और अधम पुरूषों की कृपा और क्रोध, लोभ–प्रतिलोभ से रेशम सूत और रजाई की गाठों के समान होते हैं। उत्तमजन की

कृपा रेशम की गॉठ तुल्य होती है, जो एक बार पड़ गई तो आसानी से नहीं खुल पाती । मध्यम पुरूष की कृपा सूत की गॉठ के समान होती है, जो कि समय आने पर खुल सकती है। अधम पुरूषों की कृपा तो रजाई की गॉठ के समान होती है, जो जरा सी ढील पड़ी तो अलग–थलग। इसी प्रकार उल्टे–क्रम से इन तीनों का क्रोध भी है। उत्तम की रीस रजाई की गांठ, मध्यम की रीस सूत की गांठ और अधम की रीस रेशम की गांठ की भॉति होती है।

उत्तम, मध्यम, अधम की कृपा रीस अस भाइ।
गांठी लोभ–प्रतिलोभ जिभि पाट, दुकुल, रजाइ।। [7]

संतो के क्रियाकलापों पर ध्यान नहीं देना चाहिये। उनके रसभोग पर शंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि उनका स्तर सामान्यजन से उच्च होता है। वे सब रसों का आस्वाद लेते हुए भी उनके प्रभाव से आलिप्त रहते हैं। जैसे जीभ जठराग्नि के प्रभाव से निर्लिप्त रहती है जठराग्नि सबको पचा देती है।

उत्तम जन की होड़ करि नीच न होत रसाल।
कौआ कैसे चल सके राजहंस की चाल।। [8]
सरसुति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यो–ज्यों खरचै त्यों–त्यों बढ़े बिन खरच घर जात।।
जो जैसे तिहि तैसिये, करिए नीति प्रकास।
काठ कठिन भेदे भ्रमर, मृदु अरविन्द निवास।। [9]
गहत तत्व ग्यानी पुरूष, बात विचारि, विचारि।
मथ निहार तजि घाघ को, माखन लेत निकारि।।
सब रस भोगे संत कबू, तदू रहे निष्पाप।
स्निग्ध पगी रसना जिमि, अलेप अगन परताप।। [10]

बड़े जो कुछ करते है, सोच समझा कर करते है। इसलिए उनके कार्यो के प्रति शंका नहीं करनी चाहिए। ब्रह्म ने बेटी पर मन लगाया तो उसका भी कोई कारण होगा। उदाहरण देखिए–

बड़ करे सब समुझिके, भूले नहीं को ठोर।
विधि बेटी पे चित्त धयो नहिं कछुकारन ओर।। [11]

जीवन में विवके का अत्यधिक महत्व है। विवेकहीन कर्म निष्फल होते है। खर्च भी करना हो तो विवके से ही करना चाहिए। बंशी पर केवल फूंक मार कर ही संगीत पैदा नहीं होता उसमें अंगुलियों की भी आवश्यकता रहती है–

'बिन विवेक वसु व्यय किये, शेभा कोउ न पाय।
फूंकी बंसुरी रसन ज्यों, अंगुरी बिना लगाए।। [12]

दयाराम का कथन है प्रीति भी विवके से ही काम लेने पर जोड़नी चाहिये। अपने विवके द्वारा इसमें प्रकृति का भी ध्यान रखना चाहिए। प्रकृति के मिले बिना जो प्रीति जुड़ती है वह विधा उत्पन्न कर सकती है जैसे रोटी और गंडेरी एक साथ खाने में क्या थूका जाए और क्या निगला जाए जैसी दुविधा उत्पन्न हो सकती है–

प्रीति जरि प्रवृति न मिली, वह दुहु परव दुख पाय।
रोटी गंडेरी चबी, क्यों डारे क्यों खाय।। [13]

किसी भी कार्य के प्रति ना कहना अत्याधिक कठिन कार्य है, ना कहने से कटूता उत्पन्न होती है और इसको बुरा माना जाता है। दयाराम कहते हैं कि विवके से कार्य लेकर ना कहना श्रेयकर होता है, ना कहने पर तुरन्त बुरा अवश्य लगता है किन्तु विवेकपूर्ण ना कहने जिस ना का परिणाम भला हो उसको कहने में व्यक्ति को संकोची नहीं होना चाहिए – केठ कटे पर कटु ना की यह सयानी रीति नहीं है

तनक बुराई तुरत भूल, जामे अति परिणाम।
कंठ कटे कटु ना कहे, सो ना सयानो काम।। [14]

कथनी से करनी वरेण्य हैं। करनी सर्वदा विवके के साथ करने में ही लाभ है। कथनी से कुछ सघता नहीं है, जैसे लाख मन अंगार लिखने से अग्नि उत्पन्न नहीं होती।

कथनी कोरी ना काम की, करनी रंच हु सार।
उड़े ना दारू डारिये, लखि लखमन अंगार।। [15]

अहं अहमिका कदाचित उचित नहीं होती। गुप्त रूप से कार्य करने से प्रभावी बन पाना संभव है। गधा हों–हों (अहं–अहं) करता है। इसलिये उस पर वनज लादा जाता है। मैंने (कामदेव) मैं–न मैंने (अहता त्याग) कह कर प्रभावशाली बन जाता है। नर–नारी उसके अधीन हो जाते है–

हों हों हों रासभ करें, बोझ ढोय लहि प्रहार।
मैं न नाम ही मात्र सब, स्भर के बस संसार।। [16]

किसी को समझने के लिए, समझाने के लिए उदाहरण या द्रष्टांत अत्यधिक उपयोगी होता है। कथा वाचक या लोक नायक उदाहरणो के माध्यम से ही अपनी बात मनवाने में सफल होते हैं दयाराम के अनुसार उदाहरण तो एपनयन हैं ,जिससे वृद्धों की भी स्पष्ट दिखाई देता है । चश्मा छोटी से छोटी वस्तु को नयन – गम्य बनाता है उदाहरण बात को स्पष्ट करते हुए कहते हैं–

'कछु मति कूर सिद्धांता यो दृष्टांत बताय ।
अनु अक्षर उपनयन जिमि दे फुट वृद्ध दिखाय ।। [17]

निश्कर्श

कहा जा सकता है कि सतसईकारों ने स्पश्ट किया है कि संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना वातावरण होता है। सजातीय वस्तुएं कठिनाईयों में भी एक साथ रह सकती है। विजातीय वस्तुओं का उनमें समावेश संभव नहीं हो सकता। तूणीर में यदि वह संपूर्ण भरा हो तो भी उसमें एक दो तीर समाए जा सकते हैं लेकिन स्थान होने पर धनुष का वहां समावेश असंभव है।

संधर्व सूची

1. दयाराम सतसई दो0 481–82
2. दयाराम सतसई दो0 381
3. दयाराम सतसई –दो0 645

4. वृन्द कवि 'विनोद वृन्द सतसई प0 87
5. दयाराम सतसई दोहा 503
6. दयाराम सतसई दोहा 542
7. दयाराम सतसई, दोहा 681
8. वृंद विनोद सतसई 54
9. वृंद विनोद सतसई पृ0 89
10. वृंद विनोद सतसइ पृ0 76
11. वृंद विनोद सतसइ पृ0 99
12. दयाराम सतसई दोहा नं. 396
13. दयाराम सतसई दोहा नं. 642
14. दयाराम सतसई दोहा नं. 456
15. दयाराम सतसई दोहा नं. 505
16. दयाराम सतसई दोहा नं